मानवशास्त्र की प्रकृति (Nature of Anthropology)

मानवशास्त्र की प्रकृति के सम्बन्ध में मूल प्रश्न यह है कि इसे प्राकृतिक विज्ञानों में रखा जाए अथवा सामाजिक विज्ञानों में। वास्तव में मानवशास्त्र एक प्राकृतिक विज्ञान भी है और साथ ही एक सामाजिक विज्ञान भी। यह इस दृष्टि से कि मानवशास्त्र के दो प्रमुख भागों में से प्रथम भाग - शारीरिक मानवशास्त्र एक प्राकृतिक विज्ञान है और द्वितीय भाग - सांस्कृतिक मानवशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। मनुष्य प्रकृति का एक अंग है और इस रूप में उसका अध्ययन मानवशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है। शारीरिक मानवशास्त्र के रूप में यह मानव के उद्भव एवं उद्विकास तथा शरीर रचना का अध्ययन करता है। यह शारीरिक विशेषताओं के आधार पर मानव की प्रजातियों का तुलनात्मक अध्ययन करके उनका वैज्ञानिक वर्गीकरण करता है। अतः शारीरिक मानवशास्त्र एक प्राकृतिक विज्ञान है। दूसरी ओर सांस्कृतिक मानवशास्त्र में मानव - समाज के स्वरूप तथा इतिहास का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत देश और काल की सीमाओं में अपने आपको नहीं बांधते हुए मानवशास्त्री मानव के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करते हैं। वे विभिन्न संस्कृतियों के विवेचना तथा तुलनात्मक अध्ययन में रुचि लेते हैं। इस रूप में सांस्कृतिक मानवशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। होबल ने मानवशास्त्र के प्रकृति के सम्बन्ध में लिखा है, "मानव का अध्ययन जो मानवशास्त्र

कहलाता है, जब विज्ञान के सिद्धान्तों तथा पद्धतियों के अनुरूप किया जाता है, तब फलस्वरूप वह एक प्राकृतिक विज्ञान है। इसकी अनोखी विशेषता यह है कि एक प्राकृतिक विज्ञान के रूप में वह एक साथ शारीरिक तथा सामाजिक विज्ञान दोनों ही है।"

पेनीमैन (Penniman) ने मानवशास्त्र को एक ओर प्राकृतिक इतिहास की शाखा और दूसरी ओर इतिहास का विज्ञान माना है। प्राकृतिक इतिहास की एक शाखा के रूप में मानवशास्त्र मानव की उत्पत्ति और स्थिति का अध्ययन करता है। इतिहास के एक विज्ञान के रूप में यह मानव का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन कर इतिहास की खोई हुई कड़ियों को जोड़ने का प्रयत्न करता है। मानवशास्त्री प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक युगों के मानव के शारीरिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करते हैं, उसके व्यवहार से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करते हैं एवं विविध घटनाओं का विश्लेषण करते हैं। ऐसे अध्ययनों के आधार पर मानवशास्त्री शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन अथवा क्रियाओं के सम्बन्ध में सामान्य नियमों का पता लगाते हैं। इस रूप में मानवशास्त्री इतिहासकार की भूमिका निभाते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि मानवशास्त्र इतिहास का विज्ञान है।

मैलिनोवस्की (Malinowski) मानवशास्त्र को शारीरिक और प्राकृतिक विज्ञानों में से एक मानते हैं। सर्वश्री रेडक्लिफ ब्राउन, फोर्टिज तथा नेडल, आदि का मत है कि मानवशास्त्र एक प्राकृ-

तिक विज्ञान है। इसमें अक्सर प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। इन विद्वानों की मान्यता है कि मानवशास्त्र का उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों का तुलनात्मक विश्लेषण कर मानव-समाजों के उद्गम, कार्य करने के तरीकों तथा परिवर्तन के सम्बन्ध में सामाजिक नियम को ढूंढ निकालना है। दूसरी ओर सर्वश्री क्रोबर, लिंटन तथा इवान्स प्रिचार्ड आदि का मत है कि मानवशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। मानवशास्त्र को सामाजिक विज्ञान मानने वालों का कहना है कि मानव-समाज सौरमण्डल के समान प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है। यह सामाजिक सम्बन्धों की एक व्यवस्था है। ये सामाजिक सम्बन्ध प्राकृतिक शक्तियों द्वारा नहीं बने रहते हैं, बल्कि नैतिक मूल्यों द्वारा। इस सम्बन्ध में सर्वश्री मजूमदार तथा मदान ने लिखा है, "इसलिए, एक समाज एक सामाजिक और नैतिक व्यवस्था है तथा इसके अध्ययन को सहोदर विषयों, उदाहरण के रूप में इतिहास के समान वर्गीकृत करना होगा। यह एक सामाजिक विज्ञान है जिसका जीवन को पुनः रूप देने तथा पुनः रचने के कार्य से निकट सम्बन्ध है। मानवशास्त्री सामाजिक पुनर्निर्माण के ऐसे ही कार्यों में लगे हुए हैं। इसलिए मानवशास्त्र एक मानविकी है (Humanity) है।" उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानवशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है और इतिहास तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ इसका गहरा सम्बन्ध है, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह बात सांस्कृतिक मानवशास्त्र के सम्बन्ध में ही सत्य है

न कि शारीरिक मानवशास्त्र के सम्बन्ध में। शारीरिक मानवशास्त्र, प्राणीशास्त्र तथा जन्तुविज्ञान के समान एक प्राकृतिक विज्ञान ही है।

स्पष्ट है कि शारीरिक मानवशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों से अधिक निकट है। इसमें प्राकृतिक विज्ञानों में लायी जाने वाली पद्धतियों को काम में लाया जाता है। सांस्कृतिक मानवशास्त्र सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी के अधिक निकट है। सांस्कृतिक मानवशास्त्रियों ने इतिहास तथा सौन्दर्यशास्त्र के प्रारूपों का उपयोग किया है, यद्यपि यह बात भी सही है कि रैडक्लिफ ब्राउन तथा मैलिनोवस्की, आदि विद्वानों ने सांस्कृतिक मानवशास्त्र में प्राकृतिक विज्ञानों के समान सांख्यिकीय तथा प्रकार्यात्मक प्रारूपों का भी प्रयोग किया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि मानवशास्त्र का प्रथम भाग- शारीरिक मानवशास्त्र जो मानव की उत्पत्ति, उद्विकास तथा शारीरिक बनावट, आदि से सम्बन्धित है, प्राकृतिक विज्ञानों के अधिक निकट है। इसका दूसरा भाग - सांस्कृतिक मानवशास्त्र जो मानव समाज और उसकी संस्कृति से सम्बन्धित है तथा जो मानव समाज के स्वरूप और मानव जाति के प्रत्येक अंश की संस्कृति का अध्ययन करता है, सामाजिक विज्ञानों के अधिक निकट है। उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम यह कहने की स्थिति में हैं कि मानवशास्त्र प्राकृतिक एवं सामाजिक दोनों ही प्रकार का विज्ञान है।